सफलता की कहानी

सफल कृषक – देवी प्रसाद यादव

देवी प्रसाद यादव, ग्राम– लालपुर, तहसील– कोटा, जिला– बिलासपुर का निवासी हूँ। मेरे पास 10 एकड़ जमीन है जिसमें से 5 एकड़ सिंचित है और 5 एकड़ असिंचित है। सिंचित ट्यूबवेल वाले खेत में स्वर्णा, एच. एम. टी. धान की रोपाई करवाता हूँ।

रोपाई से पहले जमीन की तैयारी करने की विधि :– मेरे द्वारा लगभग 30 वर्षों से खेती की जा रही है। मैं सबसे पहले मिट्टी का परीक्षण करवाता हूँ ये मिट्टी परीक्षण संबंधी जानकारी मुझे कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर के डॉ. दिनेश शर्मा, विनम्रता मेडम द्वारा मिली है और साथ ही साथ आकाशवाणी से प्रसारित किसान वाणी कार्यक्रम सुनता था।

अप्रैल–मई के माह में अकरस जुताई करता हूँ, जिससे कीड़े–बीमारी के साथ–साथ खरपतवार का खेत में प्रकोप कम होता है और इस तरह से अकरस जुताई करके आर्थिक रूप से फायदा मिलता है खर्च में बचत होती है। मैं ''श्री पद्धति'' से धान की रोपाई करता हूँ जिससे पहले की अपेक्षा आधे खर्च में रोपाई का कार्य पूर्ण हो जाता है। जैसे पहले एक एकड़ भूइंया की रोपाई के लिये 2500 रूपये लगता था, इस पद्धति में एक एकड़ में 1200 रूपये में ही रोपाई हो जाती है। धान कतार में लगाने से पौधे को खाद, हवा, पानी उचित मात्रा में ले पाते है इससे धान में कंसा अधिक निकलते है जो 50–60 तक की संख्या में प्रत्येक धान के पौधे में होते हैं इससे फसल अच्छी होता हैं। असिंचित खेती में प्रति एकड़ धान की उपज 15 क्विंटल और सिंचित खेती में 25 क्विंटल के लगभग होता हैं। ''श्री पद्धति '' में बीज की मात्रा प्रति एकड़ 5 कि.ग्रा. और बोनी विधि में 40 कि.ग्रा., गोबर खाद की मात्रा 2 ट्रेक्टर प्रति एकड़ उपयोग करतें है।

मुझे कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा लगातार सतत प्रशिक्षण व मार्गदर्शन पूरे फसल अवधि के दौरान प्राप्त होता रहा है। इसकें अतिरिक्त चने की फसल की किस्म जे जी 11 के प्रर्दशन से लगभग दुगुनी उपज प्राप्त हुई । इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत मुझे एवं ग्राम वासियों को मशरूम एवं फल परिरिक्षण पर प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है जिससे हमारी अतिरिक्त आय बढी है एवं पोषण स्तर सुधरा है।

अंतिम में सभी किसान भाईयों को बताना चाहता हूँ कि अच्छी लगन से वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में खेती करें तब खेती से अधिक फायदा मिलेगा।

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक, कृषि प्रसार

रबी फसल में सब्जी उगाकर लाभ प्राप्ति

सफल कृषक – श्री मुरली प्रसाद जी

ये कहानी ऐसी है जिन्होने अपने खेत में धान, गेहूँ के साथ सब्जी की खेती का उपयोग किया। इसके पास खेती के लिये यंत्र तो उपलब्ध न था परन्तु अपनी मेहनत एवं कृषि वैज्ञानिकों की जानकारी से लाभ कमाया। ये किसान का नाम श्री मुरली प्रसाद जी जो की ग्राम धूमा के निवासी है। धूमा गाँव बिलासपुर जिले के बिल्हा तहसील के अंतर्गत एक छोटा सा गाँव है। श्री मुरली प्रसाद जी का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था। इन्होने पढ़ाई के साथ–साथ पिताजी को कृषि में हाथ बटाते थे। इन्होने गुरू घासीदास विश्वविद्यालय से हिन्दी समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर किये है।

श्री मुरली प्रसाद जी से उनके खेती की जानकारी लेते कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र बिलासपुर के 3 वर्ष तथा कई वर्षो तक पास के ग्राम दर्रीघाट के हायर सेकेन्ड्री स्कूल उच्च श्रेणी शिक्षक के रूप में पदस्थ थे। सेवा निवृत्त होने के पश्चात् इन्होंने कुछ वर्ष तक पुराने पद्धति से खेती की। जिससे की इन्हे अधिक लाभ प्राप्त नहीं हुआ। तत्पश्चात् इन्होने कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि समाचारों में रखकर सब्जी की सही तरह से खेती कर लाभ कमाया। इनके पास 5 एकड़ जमीन है जिससे इन्होने एक ट्यूबवेल की सुविधा भी करवा रखी है। अपने खेत के 3 एकड़ हिस्से में सब्जी की खेती की, और 15 हजार से भी अधिक धन राशि प्राप्त कर चूके है। इस प्रकार श्री मुरली प्रसाद जी ने कृषि में अपना जीविका का अच्छा साधन प्राप्त कर लिया है। लेकिन फसलों को बंदरों से अधिक हानि पहुँचता है और खेती के समीप स्थित् कारखाने में धुएँ में सब्जी को काफी हानि पहुँचती है।

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक, कृषि प्रसार